डॉ. मैथ्यू एस. हारमोन, बाइबल का बाइबल में इस्तेमाल, सेशन 1, बाइबल की पढ़ाई का महत्व, बाइबल का बाइबल में इस्तेमाल और कैसे शुरू करें,

BiblicaleLearning.org द्वारा स्पॉन्सर्ड, टेड हिल्डेब्रांट द्वारा

यह डॉ. मैथ्यू एस. हरमन हैं, जो बाइबल के इस्तेमाल पर एक सीरीज़ में हैं। यह सेशन नंबर एक है, बाइबल के इस्तेमाल की स्टडी करने की वैल्यू और इसे कैसे शुरू करें। बाइबल के इस्तेमाल पर इस कोर्स में आपका स्वागत है।

इस पहले सेशन का टाइटल है: बाइबल के इस्तेमाल की स्टडी करने की वैल्यू और इसे कैसे शुरू करें। मैं डॉ. मैट हरमन हूँ, और मैं इसके लिए आपका गाइड रहूँगा। और जैसे ही हम शुरू करेंगे, मैं यह बताना चाहता हूँ कि इन सेशन का मटीरियल इस किताब के कुछ हिस्सों पर आधारित है जिसे मैंने गैरी स्निकर के साथ मिलकर लिखा है, जिसका नाम है 'बाइबल के इस्तेमाल की स्टडी कैसे करें: सात परमानेंट चॉइस'।

और इसलिए अगर इन लेक्चर में आपको जो मिलता है, उससे आपकी दिलचस्पी बढ़ी है, तो मैं आपको यह किताब खरीदने और इस विषय को और भी गहराई से समझने के लिए कहूंगा। तो जब हम शुरू करते हैं, तो यह हमेशा अच्छा होता है कि हम इस बात से शुरू करें कि बाइबिल में बाइबिल के इस्तेमाल से हमारा क्या मतलब है। हो सकता है कि आप पहले से ही इस बात से परिचित हों कि न्यू टेस्टामेंट के लेखक बाइबिल टेस्टामेंट को कोट करते हैं या उसका इशारा करते हैं, लेकिन हम जानबूझकर बाइबिल में बाइबिल के इस्तेमाल की बात का इस्तेमाल ओल्ड टेस्टामेंट के लेखकों द्वारा ओल्ड टेस्टामेंट के शुरुआती हिस्सों का इस्तेमाल करने को भी दिखाने के लिए करते हैं।

तो बेसिक डेफ़िनिशन क्या है? बेसिक डेफ़िनिशन यह है कि बाद के बाइबिल के लेखक पहले की बाइबिल की लिखी बातों का किसी तरह से इस्तेमाल कैसे करते हैं। इसके बारे में सोचने का एक और तरीका है जिसे कभी-कभी स्क्रिप्चरल एक्सजेसिस ऑफ़ स्क्रिप्चर कहा जाता है। और एक शुरुआती पॉइंट के तौर पर, बाइबिल के हिसाब से, हम इसे कैसे देखते हैं, मुझे लगता है कि हमारे लिए सोचने के लिए एक अच्छा हिस्सा वह है जो पीटर ने 1st पीटर चैप्टर 1 वर्सेज 10 से 12 में लिखा है।

इस मुक्ति के बारे में अपॉसल लिखते हैं, जिन पैगंबरों ने उस कृपा के बारे में भविष्यवाणी की थी जो तुम्हें मिलने वाली थी, उन्होंने ध्यान से खोजा और पूछताछ की, यह पूछते हुए कि जब मसीह की आत्मा ने मसीह के दुखों और उसके बाद की महिमाओं की भविष्यवाणी की, तो वह उनमें किस व्यक्ति या समय की ओर इशारा कर रही थी। उन्हें यह बताया गया कि वे अपनी नहीं, बल्कि तुम्हारी सेवा कर रहे थे, उन चीज़ों में जो अब उन लोगों के ज़रिए तुम्हें बताई गई हैं जो स्वर्ग से भेजी गई पवित्र आत्मा के ज़रिए तुम्हें खुशखबरी सुनाते हैं, ऐसी चीज़ें जिन्हें देखने के लिए फ़रिश्ते तरसते हैं। तो यह टेक्स्ट हमें यह इशारा कर रहा है कि जैसे बाद के बाइबिल लेखकों को आत्मा से प्रेरणा मिली और भगवान उन्हें लिखने के लिए प्रेरित कर रहे थे, उन्होंने ध्यान से खोजा और पूछताछ की।

उन्होंने इस पर सोचा कि यह क्या है, सिर्फ़ यह नहीं कि भगवान अभी उन्हें क्या बता रहे हैं, बल्कि यह उससे कैसे जुड़ता है जो भगवान ने पहले उन्हें बताया था। और कई मामलों में, ऐसा लगता है कि भगवान उन बातों को दोहरा रहे थे जो उन्होंने पहले कही थीं और पैगंबर या धर्मग्रंथ के बाद के लेखक को उससे जुड़ने और यह बताने की इजाज़त दे रहे थे कि जब भगवान ने वे बातें कहीं तो उनका क्या मतलब था। तो

यह सिर्फ़ एक हिस्सा है जो हमें इस सच्चाई की एक झलक देता है। तो जब हम बाइबिल में बाइबिल के इस्तेमाल के बारे में सोचते हैं, तो आप सोच रहे होंगे कि उस बात का इस्तेमाल क्यों किया गया है। मैं इसे बाइबिल कहता हूँ।

फिर से, यह इस सच्चाई को दिखाने के लिए है कि बाद के ओल्ड टेस्टामेंट लेखकों ने ओल्ड टेस्टामेंट के शुरुआती हिस्सों का इस्तेमाल किया। और इसलिए हम इसके कई उदाहरण देखते हैं। मैं आपको यहाँ शुरू करने के लिए एक उदाहरण के तौर पर बताऊँगा।

हम में से कई लोग यशायाह के चैप्टर 6 से परिचित होंगे, और यशायाह को सिंहासन कक्ष का जो दर्शन हुआ, उसके बाद परमेश्वर कहते हैं, "हमारे लिए कौन जाएगा? यशायाह कहते हैं, मैं यहाँ हूँ, मुझे भेजो। और फिर यहोवा यशायाह से यह कहते हैं। वह कहते हैं, जाओ और इन लोगों से कहो, सुनते रहो, पर समझो मत।

देखते रहो, पर समझो मत। इन लोगों का दिल सुस्त और उनके कान भारी कर दो और उनकी आँखें अंधी कर दो, कहीं ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें और अपने कानों से सुनें और अपने दिल से समझें और फिरकर ठीक हो जाएँ। तो यही यशायाह 6 कहता है।

और आप बोल्ड में लिखे अंडरलाइन शब्दों से देखेंगे कि यह असल में Deuteronomy चैप्टर 29 से भाषा उधार ली गई है। वहाँ दूसरी आयत में लिखा है कि मूसा ने पूरे इज़राइल को बुलाया और उनसे कहा, तुमने वह सब देखा है जो प्रभु ने मिस्र देश में तुम्हारी आँखों के सामने फिरौन और उसके सभी सेवकों और उसकी सारी ज़मीन के साथ किया। वे बड़ी परीक्षाएँ जो तुम्हारी आँखों ने देखीं, वे निशानियाँ और वे बड़े चमत्कार।

लेकिन आज तक, भगवान ने तुम्हें समझने के लिए दिल या देखने के लिए आँखें या सुनने के लिए कान नहीं दिए हैं। और इसलिए इतना ओवरलैप होना कोई एक्सीडेंटल बात नहीं है। यह सिर्फ़ कोई अजीब इत्तेफ़ाक नहीं है।

यशायाह में यह भाषा जानबूझकर Deuteronomy 29 में कही गई बातों को उठा रही है। और यहाँ यशायाह 6 में, उस भाषा का इस्तेमाल किया जा रहा है और उसे एक नई स्थिति पर लागू किया जा रहा है। तो आपके पास पुराने नियम का एक बाद का लेखक है जो पुराने नियम में पहले पाई जाने वाली भाषा का इस्तेमाल कर रहा है।

और इसलिए यह पुराने नियम के लेखक द्वारा पुराने नियम के धर्मग्रंथ का इस्तेमाल करने के कई उदाहरणों में से एक है। और इन उदाहरणों को देखने से एक मतलब निकलता है। तो यह पुराने नियम का पुराने नियम का इस्तेमाल है।

लेकिन हाँ, न्यू टेस्टामेंट में ओल्ड टेस्टामेंट के इस्तेमाल के भी उदाहरण हैं। और ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं जिनसे हम गुज़र सकते हैं। लेकिन आइए हम रोमियों के चैप्टर 10, वर्सेज 6 से 8 में इसे देखें। पॉल लिखते हैं, लेकिन विश्वास पर आधारित नेकी कहती है, अपने दिल में यह मत कहो कि कौन स्वर्ग में चढ़ेगा, यानी क्राइस्ट को नीचे लाएगा, या कौन रसातल में उतरेगा, यानी क्राइस्ट को मरे हुओं में से ऊपर लाएगा।

लेकिन यह क्या कहता है? वचन तुम्हारे पास है, तुम्हारे मुँह में है, और तुम्हारे दिल में है; यही विश्वास का वचन है जिसे हम बताते हैं। और फिर अगर आप Deuteronomy 30, आयत 12 से 14 में जो पाते हैं उसे देखें, तो आप देखेंगे कि पॉल इस टेक्स्ट से बहुत साफ़ तौर पर भाषा ले रहे हैं। Deuteronomy 30, आयत

12 शुरू होती है, यह स्वर्ग में नहीं है कि तुम कहो, कौन हमारे लिए स्वर्ग में चढ़ेगा और इसे हमारे पास लाएगा, ताकि हम इसे सुन सकें और कर सकें।

और न ही यह समुद्र के पार है कि तुम कहो, कि कौन हमारे लिए समुद्र पार जाएगा और उसे हमारे पास लाएगा, ताकि हम उसे सुनें और उस पर अमल करें। लेकिन यह बात तुम्हारे बहुत करीब है। यह तुम्हारे मुँह और तुम्हारे दिल में है, ताकि तुम उस पर अमल कर सको।

अब इस उदाहरण के बारे में खास तौर पर दिलचस्प बात यह है कि पॉल अपने तर्क में Deuteronomy 30 के इन वाक्यों का मतलब बताने में बहुत साफ़ हैं। तो आप देखेंगे कि वह कहते हैं, उदाहरण के लिए, स्वर्ग में कौन जाएगा, और फिर वह यह पैरेन्थेटिकल टिप्पणी करते हैं, यानी, क्राइस्ट को नीचे लाना। तो वह मतलब बता रहे हैं।

वह सिर्फ़ कॉपी और पेस्ट नहीं कर रहा है; वह उससे जुड़ रहा है, उसका मतलब निकाल रहा है, उस पर सोच रहा है। और यह उन कई उदाहरणों में से सिर्फ़ एक है जिन्हें हम बता सकते हैं। तो इससे आपको अंदाज़ा हो जाता है कि यह क्या है: बाइबल का बाइबल में क्या इस्तेमाल है।

अब हमें थोड़ा सोचना होगा कि यह क्यों ज़रूरी है। यह क्यों मायने रखता है? क्या यह सिर्फ़ स्कॉलर्स के लिए है और ऐसा कुछ है जिसका आम ईसाई ज़िंदगी पर कोई असर नहीं पड़ता? मैं कहूंगा कि यह ज़रूरी है क्योंकि यह एक्सजेसिस से जुड़ता है। दूसरे शब्दों में, बाइबिल का बाइबिल में इस्तेमाल तब काम आता है जब हम टेक्स्ट का मतलब तय करते हैं। यह समझना मुश्किल है कि रोमियों 10 में पॉल क्या कह रहे हैं, अगर आपको Deuteronomy 30 में कही गई बातों का अंदाज़ा नहीं है।

तो यह हमें टेक्स्ट का मतलब समझने में मदद करता है। लेकिन यह बाइबिल थियोलॉजी से भी जुड़ता है। और उस शब्द का इस्तेमाल कई अलग-अलग तरीकों से किया जाता है।

लेकिन बाइबिल थियोलॉजी से मेरा मतलब बाइबिल की कहानी को समझना है जो जेनेसिस से लेकर रेवेलेशन तक चलती है, और थीम, वादे, वादे और लोगों को दिखाती है और आपको बाइबिल के सही मैसेज को समझने में मदद करती है। और एक तरीका जिससे भगवान हमें यह देखने में मदद करते हैं कि पूरी बाइबिल एक साथ कैसे फिट होती है, वह है बाद के बाइबिल लेखकों का पहले के बाइबिल टेक्स्ट के साथ इंटरैक्ट करना। बाइबिल की स्टडी करने में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह पता लगाना है कि यह एक साथ कैसे फिट होती है।

और इस बारे में अलग-अलग सुझाव हैं कि हम, मान लीजिए, ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट और इस तरह की चीज़ों को एक साथ कैसे रखें। लेकिन मैं आपको सुझाव दूंगा कि इन सवालों के जवाब देने के लिए सबसे अच्छी शुरुआत यह देखना है कि न्यू टेस्टामेंट के लेखकों ने खुद ओल्ड टेस्टामेंट को कैसे समझा, इस आधार पर कि वे इसे कैसे कोट करते हैं और कैसे इसका ज़िक्र करते हैं और कैसे इसके साथ इंटरैक्ट करते हैं। इससे हमें यह समझने के लिए एक शुरुआती पॉइंट मिलता है कि वे ओल्ड टेस्टामेंट में परमेश्वर ने जो बताया और न्यू टेस्टामेंट में जो कह रहे हैं, उसके बीच के रिश्ते को कैसे देखते हैं।

तो यह बाइबिल थियोलॉजी का हिस्सा है। मुझे लगता है कि यह सिस्टमैटिक थियोलॉजी पर भी लागू होता है। इसलिए जब मैं सिस्टमैटिक थियोलॉजी शब्द का इस्तेमाल कर रहा हूं, तो मैं बाइबिल की उस स्टडी के बारे में सोच रहा हूं जो खास कैटेगरी और टॉपिक के आधार पर बाइबिल में कही गई सभी बातों को एक साथ लाने की कोशिश करती है।

तो बाइबल भगवान के बारे में क्या कहती है? और इसलिए आप जितने हो सकें उतने टेक्स्ट को इकट्ठा करने की कोशिश करते हैं और उन्हें एक समरी में मिलाते हैं। बाइबल इंसानों के बारे में क्या कहती है? बाइबल इस बनाई गई दुनिया के बारे में क्या कहती है? ये सभी अलग-अलग तरह की कैटेगरी हैं जो हमें सिस्टमैटिक थियोलॉजी में मिलती हैं। और फिर, बाद के बाइबल लेखक पहले के धर्मग्रंथों के साथ कैसे जुड़ते हैं, इससे हमें यह देखने का एक तरीका मिल सकता है कि उन अलग-अलग, अलग-अलग टेक्स्ट के बीच कनेक्शन बनाना शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है और उन्हें एक जैसा बनाने की कोशिश करें।

आखिर में, मुझे लगता है कि जब बाइबल के इस्तेमाल को पढ़ने और समझने की बात आती है, तो ईसाई जीवन के लिए इसके फायदे हैं। एक लेवल पर, जब आप शायद सबसे बुनियादी बात के बारे में सोचते हैं , तो हम बाइबल को कैसे पढ़ते हैं, यह पूरी तरह से इस बात को तय करेगा कि हम ईसाई जीवन कैसे जीते हैं। एक बहुत ही प्रैक्टिकल उदाहरण देने के लिए, हम सभी को उम्मीद है कि कुछ हद तक यह समझ होगी कि हम, मान लीजिए, लेविटिकस में जो पढ़ते हैं और मान लीजिए, 1 पीटर में जो पढ़ते हैं, उसमें अंतर है।

तो हम लेविटिकस पढ़ रहे हैं, और हम इन सभी कानूनों और नियमों को देखते हैं, और हमें उम्मीद है कि कुछ हद तक यह एहसास होगा कि मुझे उन आयतों को ठीक उसी तरह लागू नहीं करना चाहिए जैसे इज़राइलियों ने किया था। तो जब मैंने कहा कि मुझे उस खास तरह की कुर्बानी नहीं चढ़ानी चाहिए। लेकिन क्यों? क्यों नहीं? मेरा मतलब है, यह भगवान का वचन है।

और क्रिश्चियन होने के नाते, हम भगवान की बात को सीरियसली लेना चाहते हैं। इसलिए हम यह पक्का करना चाहते हैं कि हम समझें, ठीक है, ऐसा क्यों है कि जब हम लेविटिकस पढ़ते हैं, तो हम यह नहीं कहते, ठीक है, मुझे लगता है कि मुझे बाहर जाकर यह खास कुर्बानी देनी होगी? खैर, बाइबिल का इस्तेमाल हमें यह समझने में मदद कर सकता है कि हम जो कुछ चीजें नहीं करते हैं, वे क्यों नहीं करते हैं। और फिर भी, कंटिन्यूटी क्या हैं? उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि हमें वही कुर्बानी नहीं देनी चाहिए।

और फिर भी 1 पीटर लेविटिकस 11 को कोट करेंगे जो कहता है कि भगवान के लोगों को पवित्र होना चाहिए क्योंकि भगवान पवित्र हैं। तो यह साफ़ है कि लेविटिकस और 1 पीटर के बीच कुछ भी नहीं बदला है। और इसलिए वह उदाहरण भी हमें यह देखने में मदद करता है कि न्यू टेस्टामेंट हमें यह समझने में कैसे मदद करता है कि हमें क्रिश्चियन के तौर पर कैसे जीना चाहिए।

और यह लेविटिकस से कोट कर रहा है। तो ये कुछ तरीके हैं जिनसे यह हमारे लिए मददगार हो सकता है। कुछ चुनौतियाँ क्या हैं? खैर, पहली चुनौतियों में से एक उस एरिया में है जिसे हम हेर्मेनेयुटिक्स के तौर पर सोचते हैं।

तो हेर्मेनेयुटिक्स मतलब निकालने की कला और विज्ञान है। हम किसी टेक्स्ट को कैसे देखते हैं? और हेर्मेनेयुटिक्स का एक हिस्सा जो बहुत ज़रूरी है, वह है अंदाज़ों या पहले से बनी धारणाओं का एरिया, जो हर किसी के पास बाइबिल पढ़ना शुरू करने पर शुरुआती पॉइंट या अंदाज़े होते हैं। और मुझे लगता है कि हम इसे अपने आप पहचान लेते हैं।

शायद आपके साथ ऐसा हुआ होगा जब आप धर्मग्रंथ का कोई हिस्सा पढ़ते हैं, और आप इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि आपको उसका क्या मतलब लगता है। और फिर आप देखते हैं, शायद आप कोई कमेंट्री या कोई रिसोर्स पढ़ते हैं, और उन्होंने वही हिस्सा पढ़ा है, और आप सोचते हैं, क्या उन्होंने सच में वही

हिस्सा पढ़ा है? क्योंकि वे मुझसे बिल्कुल अलग मतलब देख रहे हैं। और अक्सर, यह अंतर शुरुआती बातों या पहले से बनी सोच या अंदाज़ों में होता है।

उदाहरण के लिए, ज़ाहिर है कि गॉस्पेल में चमत्कार की बहुत सारी कहानियाँ हैं। जीसस हर तरह के चमत्कार कर रहे हैं। लेकिन अगर आप बाइबिल को इस सोच के साथ पढ़ें कि सुपरनैचुरल चीज़ें नहीं होतीं, भगवान नहीं होते और सुपरनैचुरल चीज़ें नहीं होतीं, तो आप उस हिस्से में जो हो रहा है, उसके लिए कोई और तरह का एक्सप्लेनेशन देंगे, बजाय इसके कि कोई कहे, नहीं, मेरा मानना है कि भगवान हैं, और मेरा मानना है कि सुपरनैचुरल दुनिया असली है।

और इसलिए ये अलग-अलग अंदाज़े और शुरुआती बातें हमारे पढ़ने और टेक्स्ट को समझने के तरीके को तय करेंगी। इसलिए जब लोग अलग-अलग शुरुआती बातों के साथ बाइबिल के पास आते हैं, तो यह बाइबिल के इस्तेमाल की स्टडी करने में एक चुनौती हो सकती है। दूसरा, पुराने और नए नियम का इंट्रोडक्शन।

मेरा मतलब है कि बाइबल की कौन सी किताबें बाइबल की दूसरी किताबों से पहले लिखी गई थीं। अब, एक तरह से, अगर आप सिर्फ़ यह पढ़ रहे हैं कि न्यू टेस्टामेंट के लेखक ओल्ड टेस्टामेंट का इस्तेमाल कैसे करते हैं, तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। यह तब और मुश्किल हो जाता है जब आप ओल्ड टेस्टामेंट, जैसे कि पैगंबरों पर काम कर रहे हों।

और कभी-कभी यह साफ़ नहीं हो पाता कि कोई पैगंबर कब लिख रहा था। शायद इसका सबसे साफ़ उदाहरण जोएल की किताब है। जानकार बहुत अलग नतीजा निकालेंगे; कुछ कहेंगे, ओह, यह इज़राइल के देश निकाले से बहुत पहले लिखा गया था।

और वे कहते हैं, ओह, नहीं, नहीं, नहीं। यह तब लिखा गया है जब देश निकाला पाए लोग बेबीलोन से लौटे थे या उस देश में रह रहे थे और बीच में कुछ बातें थीं। और इसलिए यह जानना मुश्किल हो सकता है।

ठीक है, तो अगर हमारे पास जोएल में कोई ऐसी लाइन है जो किसी दूसरे ओल्ड टेस्टामेंट पैगंबर से जुड़ी हुई लगती है, तो यह जानना मुश्किल हो सकता है कि जोएल यशायाह का इस्तेमाल कर रहा है या यशायाह जोएल का इस्तेमाल कर रहा है या जो भी मामला हो। तो ये बातें भी काम आती हैं, खासकर जब हम ओल्ड टेस्टामेंट में ओल्ड टेस्टामेंट के इस्तेमाल के बारे में बात कर रहे हों। अब, अक्सर यह इतना मुश्किल नहीं होता।

उदाहरण के लिए, जब यशायाह ड्यूटेरोनॉमी में पाई जाने वाली भाषा का इस्तेमाल करते हैं, तो यह काफी सीधी-सादी होती है। हालांकि, फिर से, यहीं पर स्कॉलरशिप के बारे में आपकी क्रिटिकल बहसें आ सकती हैं, है ना? क्रिटिकल स्कॉलर कह सकते हैं, ठीक है, मुझे पता है कि ड्यूटेरोनॉमी खुद को मूसा द्वारा लिखा हुआ दिखाता है, लेकिन असल में हमें लगता है कि यह 6th सेंचुरी या कुछ और में लिखा गया था। और इसलिए यह इसे चैलेंजिंग भी बनाता है।

एक और चुनौती पुराने नियर ईस्टर्न और सेकंड टेम्पल यहूदी संदर्भों के बारे में जानकारी है। ओल्ड टेस्टामेंट की बात करें तो दिलचस्प बात यह है कि, उदाहरण के लिए, जब आप नीतिवचन पढ़ते हैं, तो दूसरे पुराने नियर ईस्टर्न ज्ञान के ग्रंथों में भी ऐसी ही कहावतें होती हैं। और इसलिए यह सवाल उठता है।

तो क्या Proverbs का लेखक उनसे कुछ उधार ले रहा है? क्या उसे सिर्फ़ आम तौर पर ज्ञान के सिद्धांतों के बारे में पता है? तो हम उन चीज़ों के बारे में कैसे सोचते हैं? हम उनसे कैसे जूझते हैं? जब न्यू टेस्टामेंट

और ओल्ड टेस्टामेंट के उसके इस्तेमाल की बात आती है, तो मुद्दा आम तौर पर थोड़ा अलग होता है। यहाँ, यह है: क्या न्यू टेस्टामेंट के लेखकों को पता है कि दूसरे यहूदी लेखक पहले से ही उन्हीं ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट के साथ कैसे जुड़े हुए हैं जिनका वे मतलब निकाल रहे हैं? और नतीजतन, वे कितने जागरूक हैं? और अगर उन्हें पता है, तो क्या वे उन यहूदी लेखकों से सीधे ओल्ड टेस्टामेंट से ज़्यादा उधार ले रहे हैं? या वे बस उसी तरह के माहौल में जी रहे हैं जिसमें वे आम तौर पर ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट से जुड़ी मतलब निकालने वाली परंपराओं के बारे में जानते थे, लेकिन खास तौर पर यह नहीं जानते थे कि, मान लीजिए, फिलो उस टेक्स्ट का मतलब कैसे निकाल रहा होगा? तो ये कुछ चुनौतियाँ हैं जो यहाँ भी सामने आती हैं। एक और चुनौती, असली भाषाएँ, हिब्रू और ग्रीक, और हमें इसमें अरामी भाषा को भी शामिल करना चाहिए क्योंकि ओल्ड टेस्टामेंट के कुछ छोटे हिस्से अरामी भाषा में भी लिखे गए थे।

और आप सोच सकते हैं, अच्छा, यह एक इशू क्यों है? खैर, सबसे बेसिक मतलब में, अगर आप यह स्टडी कर रहे हैं कि न्यू टेस्टामेंट के लेखक ओल्ड टेस्टामेंट के साथ कैसे जुड़े, तो आपके पास पहले से ही एक लैंग्वेज की बात है। आपके पास एक लैंग्वेज की इशू है क्योंकि न्यू टेस्टामेंट ग्रीक में लिखा गया है और ओल्ड टेस्टामेंट, हिब्रू में लिखा गया है, फिर से, कुछ छोटे हिस्से अरामी में लिखे गए हैं, और तो हम इसे एक साथ कैसे रखें? खैर, इसकी एक कॉम्प्लिकेशन यह है कि न्यू टेस्टामेंट के समय तक, ओल्ड टेस्टामेंट का पूरा हिस्सा अलग-अलग जगहों पर ग्रीक में ट्रांसलेट हो चुका था। और इसलिए जब न्यू टेस्टामेंट के लेखक ओल्ड टेस्टामेंट का इस्तेमाल कर रहे होते हैं, तो अक्सर वे उन हिब्रू ओल्ड टेस्टामेंट किताबों के ग्रीक ट्रांसलेशन का इस्तेमाल कर रहे होते हैं।

लेकिन फिर यह सवाल उठता है कि ये ग्रीक ट्रांसलेशन हिब्रू ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट से कितने मिलते-जुलते हैं? आप जितना ज़्यादा इस मामले में गहराई से जाकर स्टडी करेंगे, आपको पता चलेगा कि इसमें एक तरह की रेंज है। ओल्ड टेस्टामेंट की कुछ किताबें, जब हिब्रू से ग्रीक में ट्रांसलेट की गईं, तो बहुत ध्यान से ट्रांसलेट की गईं - यह वह सही शब्द नहीं है जिसे मैं यहाँ ढूंढ रहा हूँ - लेकिन हिब्रू के शब्दों के जितना हो सके करीब रहने की कोशिश के साथ। लगभग एक आज के ज़माने के ट्रांसलेशन की तरह जो उस ओल्ड टेस्टामेंट किताब में कही गई बातों से मेल खाने के लिए, शब्द-दर-शब्द, लकड़ी की तरह जाने की कोशिश करता है।

और इसलिए आपके पास सेप्टुआजेंट के कुछ हिस्से हैं जिनका ट्रांसलेशन लगभग न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबिल की तरह किया गया है, जो अपने शब्द-दर-शब्द बहुत ज़्यादा होने के लिए जानी जाती है, और कभी-कभी इसे इंग्लिश में पढ़ना थोड़ा मुश्किल हो सकता है क्योंकि वे इस बात पर बहुत ज़्यादा ध्यान देते हैं कि ओरिजिनल भाषा का एक शब्द इंग्लिश भाषा के एक शब्द से मैच करे। तो आपके पास कुछ किताबें हैं जो वैसी ही हैं। और फिर आपके पास दूसरी किताबें हैं जो ज़्यादा डायनैमिक ट्रांसलेशन हैं, जो लगभग आज के ज़माने के ट्रांसलेशन की तरह थोड़ी ज़्यादा पढ़ी जाती हैं, जैसे न्यू लिविंग ट्रांसलेशन, जो ओरिजिनल भाषा में सटीक शब्दों से बंधे बिना फ्रेज़ और क्लॉज़ का मतलब समझने की कोशिश पर ज़्यादा फोकस्ड है।

तो यह आज के ज़माने के इंग्लिश ओल्ड टेस्टामेंट जैसा होगा, जहाँ कुछ किताबें न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड थीं, और फिर उनमें से कुछ इंग्लिश स्टैंडर्ड वर्शन जैसी थीं। और फिर दूसरी किताबें न्यू लिविंग ट्रांसलेशन जैसी हैं, और वे ट्रांसलेशन की क्वालिटी के मामले में बहुत मिली-जुली हो सकती हैं। और फिर, जैसे कि यह काफी मुश्किल नहीं है, आपके पास हमेशा वह समस्या होती है जिसे हम टेक्स्टुअल क्रिटिसिज़्म कहते हैं, जहाँ आप यह फिर से बनाने की कोशिश कर रहे होते हैं कि, उस हिब्रू मैन्युस्क्रिप्ट या सेप्टुआजेंट ट्रांसलेशन या न्यू टेस्टामेंट ग्रीक में असली शब्द क्या थे? क्योंकि आपके पास ऐसे उदाहरण हैं जहाँ शायद कोई लेखक पहचानता है, अरे, यह लेखक, ल्यूक या कोई और, इस ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट

को कोट कर रहा है या उसकी ओर इशारा कर रहा है, लेकिन उसने यह छोटा सा फ्रेज़ या शब्द छोड़ दिया।

मैं उसकी मदद करूँगा और उसे ठीक करूँगा और वह शब्द डालूँगा ताकि वह पुराने नियम के टेक्स्ट से ज़्यादा मेल खाए। तो ये सभी बातें तब काम आती हैं जब आप इस बात की गहरी स्टडी करते हैं कि बाइबल बाइबल का इस्तेमाल कैसे करती है। और यह सब कहने में मेरा डर यह है कि मैंने आपको डरा दिया है।

आप यह सब सुनते हैं और सोचते हैं, हे भगवान, मैं इसे कैसे समझ सकता हूँ? और मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि इसके भी लेवल होते हैं। ठीक है, बेशक, इन हिस्सों की गहरी एकेडमिक, बहुत डिटेल्ड स्टडी अच्छी और ज़रूरी है। लेकिन यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसमें आम बाइबल पढ़ने वाले को ज़रूरी तौर पर शामिल होने की ज़रूरत है।

और अच्छी खबर यह है कि ऐसे रिसोर्स हैं जो आपको कम से कम कुछ हद तक यह जानने में मदद कर सकते हैं कि स्कॉलर्स ने ओरिजिनल भाषा के साथ इस तरह की गहरी खोज करके क्या खोजा है। लेकिन बेसिक लेवल पर, मैं आपको यह समझाना चाहता हूँ कि यह सिंपल लेवल पर भी किया जा सकता है, अगर आप सिर्फ़ इंग्लिश में बाइबिल पढ़ सकते हैं। और जब हम इस खास सेशन के आखिर में पहुँचेंगे तो मैं इस पर वापस आऊँगा।

तो इससे बात थोड़ी साफ़ हो गई। अब मैं उस बात पर आना चाहता हूँ जिस पर हम किताब में बात करते हैं। मैंने पहले बताया था कि बाइबल की पढ़ाई के लिए बाइबल का इस्तेमाल कैसे किया जाता है।

सबटाइटल है पुराने और नए टेस्टामेंट के लिए सात हर्मेन्यूटिकल चॉइस। और इसलिए हम यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि ये अलग-अलग हर्मेन्यूटिकल मुद्दे, इंटरप्रिटेटिव मुद्दे, इस बात पर कैसे असर डालते हैं कि हम बाइबल में बाइबल का इस्तेमाल कैसे करते हैं। और साफ़ तौर पर कहूँ तो, यह किताब, मैं कहूँगा, एक सेमिनरी टेक्स्टबुक लेवल के एंगेजमेंट के लिए ज़्यादा ओरिएंटेड है।

मुझे लगता है कि इसे दूसरे लोग भी पढ़ सकते हैं और इससे फ़ायदा हो सकता है। लेकिन बस यह जान लें कि ओरिजिनल भाषाओं के साथ बहुत ज़्यादा जुड़ाव है, हालांकि हम आपको इंग्लिश टेक्स्ट में भी यह देखने में मदद करने की कोशिश करते हैं कि क्या हो रहा है। और इसलिए यह किताब इन सात हर्मेन्यूटिकल चॉइस के आस-पास बनी है।

और मैं इस कोर्स में इन सभी के बारे में नहीं बताऊंगा, लेकिन मैं आपको दिखाना चाहता हूं कि ये सात हर्मेन्यूटिकल चॉइस क्या हैं और एक बहुत छोटा सा एक्सप्लेनेशन देना चाहता हूं। और फिर आगे के सेशन में, मैं आपको टेस्ट देने के लिए उनमें से कुछ के बारे में और डिटेल में बताऊंगा। तो पहला वह है जिसे हमने सेक्रेस्टर बनाम कनेक्टेड लेबल किया है।

इन चॉइस के शब्दों में आप देखेंगे कि हम उन्हें इस बनाम उस के तौर पर दिखाते हैं। और कभी-कभी, चैप्टर के दौरान, हम इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि इनमें से एक तरीका दूसरे के मुकाबले बेहतर है। और यह उनमें से एक है।

मैं एक मिनट में समझाऊंगा कि मेरा इससे क्या मतलब है, लेकिन हम कनेक्टेड अप्रोच चुनते हैं। लेकिन दूसरे ऑप्शन यह बनाम वह होंगे, और हम कहेंगे कि यह असल में दोनों-और है, या तो-या नहीं। लेकिन यह या तो-या है, अलग बनाम जुड़ा हुआ।

हमारा मतलब यह है कि बाइबल बाइबल का इस्तेमाल कैसे करती है, इसकी एकेडमिक स्टडी में, यहाँ एक ऐसा ट्रेंड रहा है कि एक ग्रुप यह स्टडी करता है कि ओल्ड टेस्टामेंट ओल्ड टेस्टामेंट का इस्तेमाल कैसे करता है, और वे अपना काम करते हैं, और उनकी अपनी चर्चाएँ होती हैं, और उनकी अपनी स्कॉलरशिप होती है। और फिर यहाँ, आपके पास ऐसे स्कॉलर हैं जो न्यू टेस्टामेंट में ओल्ड टेस्टामेंट के इस्तेमाल की स्टडी करते हैं, और वे अपना काम करते हैं, और उनकी अपनी स्कॉलरशिप होती है, और वे शायद ही कभी एक-दूसरे से बात करते हैं। वे बस अपनी खुशी से चलते रहते हैं, और वे अक्सर अलग-अलग नतीजों पर पहुँचते हैं और कहते हैं, ठीक है, ओल्ड टेस्टामेंट के लेखक ये काम कर रहे हैं, लेकिन न्यू टेस्टामेंट के लेखक बहुत अलग काम कर रहे हैं।

हमारा तर्क यह है कि असल में, इन सबका एक ही बड़ी चीज़ के हिस्से के तौर पर एक साथ अध्ययन किया जाना चाहिए। इसीलिए हम इसे समझाने के लिए बाइबिल का इस्तेमाल करते हैं। और इसलिए जुड़े होने से हमारा यही मतलब है।

इसके अलावा, हमारा मानना है कि न्यू टेस्टामेंट के लेखक ओल्ड टेस्टामेंट के साथ जो कर रहे हैं, वह असल में उन्हीं के नक्शेकदम पर चल रहा है जो ओल्ड टेस्टामेंट के लेखक पहले के टेक्स्ट के साथ कर रहे थे। इसलिए जब आप न्यू टेस्टामेंट की बात करते हैं, तो वे कुछ एकदम नया नहीं कर रहे हैं। वे बहुत कुछ वही कर रहे हैं जो ये ओल्ड टेस्टामेंट के लेखक पहले के धर्मग्रंथ के साथ पहले से कर रहे थे।

और जब आप इन्हें एक साथ समझते हैं, तो यह आपको एक जैसा, बड़ा, हर्मेन्यूटिकल तरीका देखने में मदद करता है जो आपको धर्मग्रंथ की एकता को बेहतर ढंग से देखने में मदद करता है। तो यह पहला विकल्प है, अलग बनाम जुड़ा हुआ। दूसरा, मतलब को एडजस्ट करना और/या संदर्भ को एडजस्ट करना बनाम खुलासे को आगे बढ़ाना।

अब, यह थोड़ा और मुश्किल है। आप सोच रहे होंगे, मुझे तो पहला वाला मुश्किल लगा था। यह वाला और भी मुश्किल है, लेकिन यहाँ मेरे साथ बने रहने की कोशिश करें।

यहाँ आइडिया यह है कि जब हम किसी बाद के बाइबिल लेखक के पास आते हैं, और शायद आपको भी यह अनुभव हुआ हो, आप न्यू टेस्टामेंट पढ़ रहे हैं और आप देखते हैं, ओह, लेखक ओल्ड टेस्टामेंट के इस हिस्से को कोट कर रहा है। और फिर आप वापस जाते हैं, आप कहते हैं, मैं उस ओल्ड टेस्टामेंट के हिस्से को देखने जा रहा हूँ। और आप उसे देखते हैं, और आप सोचते हैं, कि ओल्ड टेस्टामेंट में उस हिस्से का यह सबसे साफ़ मतलब नहीं लगता।

और फिर भी ऐसा लगता है कि पॉल या मैथ्यू या ल्यूक या पीटर इसका यही मतलब बता रहे हैं। तो यह चैप्टर इसी बात को समझने की कोशिश करने के लिए है। इसके साथ क्या हो रहा है? तो क्या बाद के बाइबिल लेखकों ने टेक्स्ट का मतलब बदला या एडजस्ट किया? या वे इसके कॉन्टेक्स्ट को एडजस्ट करते हैं? या क्या यह भगवान बाद के बाइबिल लेखक के ज़रिए काम कर रहे हैं, जब वे पिछले धर्मग्रंथ की व्याख्या करते हैं ताकि उससे ज़्यादा कहा जा सके जो मूल इंसानी लेखक समझ सकता था, और फिर भी वह सही मायने में मूल पैसेज में मौजूद है? इसका यही मतलब है।

बाइबल के इस्तेमाल के इस पूरे एरिया में यह सबसे मुश्किल मामलों में से एक है। इंसानी लेखक के चाहे गए मतलब, मान लीजिए ओल्ड टेस्टामेंट का हिस्सा, और फिर न्यू टेस्टामेंट के लेखक के बाद में आकर यह कहने के बीच क्या रिश्ता है कि, असल में, इस ओल्ड टेस्टामेंट के हिस्से का मतलब यह है। आप सोचते हैं, अच्छा, क्या उस ओल्ड टेस्टामेंट के हिस्से के इंसानी लेखक ने यह पहचाना कि उसका क्या मतलब था? और फिर भगवान का लिखा होना कैसे काम आता है? उस हिस्से में भगवान का और भगवान के लिखने का इरादा क्या है? यह सब इस खास चैप्टर में मिला हुआ है।

नंबर तीन, भ्रम को कला बनाम विज्ञान के रूप में पहचानना। तो जब किसी टेक्स्ट में भ्रम की मौजूदगी देखने की बात आती है, तो कुछ तरीके अपने तरीके में लगभग साइंटिफिक होते हैं, बहुत डिटेल्ड क्राइटेरिया होते हैं। इसमें कुछ शब्द होने चाहिए जो ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट से न्यू टेस्टामेंट टेक्स्ट या जो भी हो, उसमें शेयर किए गए हों।

और अगर आप उस खास लिमिट तक नहीं पहुँचते, तो आप इसे ऐसे ही टाल देते हैं, ठीक है, यह मायने नहीं रखता। और फिर दूसरे तरीके लगभग फ्री एसोसिएशन जैसे होते हैं, बस एक तरह से, ठीक है, यह मुझे याद दिलाता है, और फिर खाली जगह भर दो। और इसलिए इस चैप्टर में, या तो-या करने के बजाय, हम यह कहने की कोशिश करते हैं कि दोनों-और हैं।

हाँ, कुछ अच्छे, ठोस सिद्धांत हैं जिन्हें हम मान सकते हैं, लेकिन एक तरह से धर्मग्रंथों में खुद को डुबोने के आधार पर सही तरह की समझ और झुकाव होने से आपको टेक्स्ट के बीच कनेक्शन देखने में मदद मिल सकती है। तो यह तीसरा चैप्टर है, भ्रम को कला बनाम विज्ञान के रूप में पहचानना। चौथा, हॉरिजॉन्टल कॉन्टेक्स्ट बनाम वर्टिकल कॉन्टेक्स्ट।

हम अपने अगले सेशन में इस बारे में और बात करेंगे। इसलिए मैं यहाँ ज़्यादा डिटेल में नहीं जाऊँगा, बस इतना कहूँगा कि ये दोनों तरह के कॉन्टेक्स्ट ज़रूरी हैं। हॉरिजॉन्टल कॉन्टेक्स्ट ओरिजिनल टेक्स्ट और बाद के टेक्स्ट, दोनों के अंदर के सेंटेंस, पैराग्राफ और चैप्टर होते हैं।

वर्टिकल कॉन्टेक्स्ट का मतलब इस आइडिया से है कि जब कोई बाइबिल का लेखक किसी पुराने टेक्स्ट का इस्तेमाल करता है, तो उसका मतलब जमा हो जाता है, और आपको उस पर ध्यान देने की ज़रूरत है। मैं इसके बारे में हमारे अगले सेशन में और समझाऊंगा। पांचवां, बाइबिल बनाम बाइबिल के अलावा दूसरे संबंध।

हमने इस बारे में थोड़ा पहले बताया था, लेकिन हम उन किताबों या लेखों में धर्मग्रंथ के इस्तेमाल या समानताओं को क्या भूमिका देते हैं जो धर्मग्रंथ से बाहर हैं? तो फिर, यह प्राचीन नियर ईस्टर्न है। यह सेकंड टेम्पल यहूदी ग्रंथ हैं। हम इसे यहाँ प्रोसेस में कैसे शामिल करते हैं? छठा, पीछे की ओर देखने वाले बनाम आगे की ओर देखने वाले टाइपोलॉजिकल पैटर्न।

हम इस पर पूरा सेशन करेंगे। तो मैं यहाँ बस इतना ही बताऊँगा कि यह दोनों है , कि धर्मग्रंथ में ही दोनों तरह की टाइपोलॉजी हैं। और मैं उस सेशन में टाइपोलॉजी की परिभाषा दूँगा।

आखिर में, सातवीं पसंद। हिस्टोरिकल एक्सजेसिस बनाम हिस्टोरिकल और प्रोसोपोलॉजिकल एक्सजेसिस। अब यह एक ऐसा शब्द हो सकता है जिसे आपने पहले कभी नहीं सुना होगा, प्रोसोपोलॉजिकल एक्सजेसिस।

यह उस बात को बताने का एक तरीका है जब कोई बाद का बाइबिल लेखक किसी पुराने बाइबिल लेखक की कही बात लेता है, लेकिन उसे किसी दूसरे बोलने वाले के साथ रखता है। यह उतना मुश्किल नहीं है जितना सुनने में लगता है। असल में, इसका मुख्य तरीका यह है, उदाहरण के लिए, हिब्रू में, जहाँ राजा द्वारा भजन में कही गई बात को हिब्रू में भगवान का अपने लोगों से बात करना कहा जाता है।

तो वह शब्द प्रोसोपोलॉजिकल , प्रोसोपोस ग्रीक शब्द है जिसका मतलब प्रोसोपोलॉजिकल है। ग्रीक शब्द का मतलब चेहरा है। और इसलिए आइडिया यह है कि इसके पीछे एक अलग स्पीकर का चेहरा है।

तो यही वो बातें हैं जिन पर हमने चैप्टर सात में बात की थी। तो इससे आपको किताब के बड़े स्कोप का एक ओवरव्यू मिलता है। मैं इस खास सेशन को कुछ छोटी डेफिनिशन देकर खत्म करना चाहता हूँ ताकि हमें समझने में मदद मिल सके।

पहला है अल्यूज़न। इस पूरे स्टडी एरिया में एक मुश्किल यह है कि स्कॉलर इन शब्दों का इस्तेमाल अलग-अलग तरह से करते हैं। इसलिए जब हम अल्यूज़न के बारे में बात करते हैं, तो हम इसे सबसे बड़ी कैटेगरी बनाने की कोशिश कर रहे होते हैं।

तो जब हम इसका इस्तेमाल करते हैं, तो इसमें दोनों कोटेशन शामिल होते हैं, जहाँ एक साफ़, लिखा हुआ कोटेशन होता है, और फिर पिछले टेक्स्ट से शब्द-दर-शब्द कोटेशन होता है। यहाँ तक कि सबसे हल्के रेफरेंस भी, जहाँ सिर्फ़ एक या दो शब्द हो सकते हैं जिनका मकसद पढ़ने वाले को पहले के टेक्स्ट पर वापस भेजना हो। यहाँ एक ज़रूरी बात यह है कि हम यह तर्क दे रहे हैं कि इशारे लेखक का इरादा होता है।

लेखक आपका ध्यान उस कनेक्शन की ओर खींचना चाहता है। शायद यह आपके लिए मददगार होगा। मैंने इसे असर के एक स्पेक्ट्रम के तौर पर बताया है।

और आप देखेंगे कि दाईं ओर, असल में यहां बाईं ओर से शुरू करें, स्क्रीन के बाईं ओर, आपको साइटेशन दिखेगा। यह साफ़ है; यह साफ़ है; यह एक कोटेशन है। अक्सर इसे एक इंट्रोडक्टरी फ़ॉर्मूला के साथ पेश किया जाता है, जैसा कि लिखा है या जैसा यशायाह ने कहा या कुछ ऐसा ही।

साफ़ है, वोकैबुलरी के बहुत सारे ओवरलैपिंग शब्द वगैरह। अब उसके आगे, हमारे पास एल्यूज़न शब्द है, जिसका मतलब है कि ज़रूरी नहीं कि कोई डायरेक्ट कोटेशन हो, बल्कि ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट से लिए गए कई शब्द हैं, जहाँ साफ़ तौर पर लेखक आपका ध्यान उस ओर खींचने की कोशिश कर रहा है। और आप देखेंगे कि जैसे-जैसे हम यहाँ दाईं ओर आगे बढ़ेंगे, लाइन धीरे-धीरे हल्की होती जाएगी।

और जिसे कुछ विद्वान इकोज़ कहते हैं, उसका मतलब है वोकैबुलरी में बहुत हल्का सा ओवरलैप, जहाँ यह सिर्फ़ एक शब्द या कुछ ऐसा हो सकता है जो बहुत हल्का हो और जिस पर, सच कहूँ तो, बहस हो सकती है। जहाँ अच्छे विश्वास वाले लोग चर्चा कर सकते हैं और कह सकते हैं, मुझे नहीं लगता कि उस ओल्ड टेस्टामेंट पैसेज का कोई ज़िक्र है। और दूसरे लोग कह सकते हैं, नहीं, असल में, मुझे लगता है कि उसी के आधार पर है।

और फिर यहाँ दाईं ओर, आपको थीम में समानताएँ मिलती हैं। और इसे ऐसे समझा जा सकता है कि यह ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट और, मान लीजिए, बाद के ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट के बीच साफ़ तौर पर शेयर की गई भाषा नहीं है, लेकिन यह एक जैसे थीम को एक जैसे तरीके से दिखाता है। और इसलिए, बाइबिल के लेखक का अभी भी इरादा हो सकता है कि आप उस पिछले ओल्ड टेस्टामेंट पैसेज के बारे में सोचें, भले ही वे उस टेक्स्ट से बिल्कुल वही वोकैबुलरी इस्तेमाल न कर रहे हों।

और इसलिए यह वह स्पेक्ट्रम है जो हमें इस बात का अंदाज़ा देता है कि बाइबिल के लेखक ओल्ड टेस्टामेंट का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं। यहाँ कुछ और परिभाषाएँ हैं। हमारा फ़ोकस उस चीज़ पर है जिसे हम एक्सजेटिकल एल्यूज़न कहते हैं, जिसका मतलब है कि एक डोनर टेक्स्ट, एक रिसेप्टर टेक्स्ट और एक एक्सजेटिकल आउटकम है।

तो हमारा इससे क्या मतलब है? डोनर टेक्स्ट वह टेक्स्ट है जिसका ज़िक्र किया गया है, ओरिजिनल टेक्स्ट। तो हमारे पहले के उदाहरणों में से एक में, जहाँ हमने देखा कि यशायाह 6, व्यवस्थाविवरण 29 से

लिया गया है, व्यवस्थाविवरण 29 वह डोनर टेक्स्ट है जो ओरिजिनल शब्दों और विचारों को डोनेट कर रहा है। तो फिर रिसेप्टर टेक्स्ट वह टेक्स्ट है जो उस पहले के टेक्स्ट को कोट कर रहा है या उससे कुछ ले रहा है।

तो यशायाह 6 रिसेप्टर टेक्स्ट है, जिसमें Deuteronomy 29 से शब्द और विचार लिए गए हैं। और फिर एक एक्सेजेटिकल नतीजा। इससे हमारा क्या मतलब है? यह रिसेप्टर टेक्स्ट के अंदर डोनर टेक्स्ट का मतलब है, जिसका मतलब है कि बाद वाला टेक्स्ट उस पैसेज के साथ कुछ कर रहा है।

असल में यह लिटरेरी इफ़ेक्ट के लिए शब्दों को उधार नहीं ले रहा है। यहाँ एक इंटरप्रिटेटिव मूव है जहाँ बाद का टेक्स्ट डोनर टेक्स्ट को इंटरप्रेट कर रहा है या उससे जुड़ रहा है। तो असल में इस किताब में हमारे काम का फ़ोकस यही है।

तो इसे यहीं खत्म करते हैं। हम कहां से शुरू करें? सबसे पहले मैं कहूंगा कि इस पर नज़र रखें। पिछले टेक्स्ट के ये इशारे देखना आपकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा आम है।

और इसलिए इसके बारे में पता होना अक्सर एक ज़रूरी शुरुआती पॉइंट होता है। दूसरी बात, और यह कुछ ऐसा है जिस पर मैं उन लोगों के लिए ज़ोर देना चाहता हूँ जो ओरिजिनल भाषाएँ नहीं जानते, वह है अपने क्रॉस-रेफरेंस पर ध्यान देना। मेरा मतलब है, ये हमारी कई इंग्लिश बाइबल में एक बेहतरीन तोहफ़ा हैं।

और इसलिए अगर आप पढ़ रहे हैं और आपको कोई फ्रेज़ दिखता है और आपको लगता है, कि यह कुछ ऐसा है जो शायद मैंने पहले सुना है, तो उसे ट्रैक करने के लिए उन क्रॉस-रेफरेंस का इस्तेमाल करें। अब, कभी-कभी वह क्रॉस-रेफरेंस सिर्फ़ एक कॉन्सेप्चुअल पैरेलल होगा जहाँ ऐसा होगा, ओह, यह पैसेज देने के बारे में बात करता है और यह दूसरा पैसेज देने के बारे में बात करता है। यह असल में कोई इशारा नहीं है।

ये बस दो टेक्स्ट हैं जो एक जैसे कॉन्सेप्ट के बारे में बात करते हैं। लेकिन दूसरी बार आपको पता चलेगा, ओह, दिलचस्प। ऐसा लगता है कि यह बाद का लेखक असल में इसी की बात कर रहा है और शायद इसी की ओर इशारा कर रहा है।

और ऐसा करने के लिए मैं एक रिसोर्स रिकमेंड करूंगा, वह यह टूल है जो आया है। इसे कनेक्टिंग स्क्रिप्चर न्यू टेस्टामेंट कहा जाता है। और इसलिए कनेक्टिंग स्क्रिप्चर न्यू टेस्टामेंट।

यह क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल ट्रांसलेशन पर आधारित है। और इस खास रिसोर्स की खास बात यह है कि टेक्स्ट में ही, ओल्ड टेस्टामेंट के संकेतों को हरे रंग में और कोटेशन को टेक्स्ट के मुख्य भाग में नीले रंग में कलर-कोड किया गया है। इसलिए जब आप इसे पढ़ते हैं, तो यह आपको अलर्ट करता है कि, अरे, यह ओल्ड टेस्टामेंट टेक्स्ट का एक संकेत है।

और फिर यहाँ क्रॉस-रेफरेंस साइड में, यह आपको बताता है कि वह हिस्सा कहाँ से आया है। तो अगर यह यहाँ टेक्स्ट की बॉडी में हरा है, तो यहाँ साइड में स्क्रिप्चर रेफरेंस हरा है। या अगर यह यहाँ टेक्स्ट में नीला है, तो यह साइड में नीला है।

इसकी एक और खासियत यह है कि नीचे स्टडी नोट्स हैं जो उस खास इशारे का मतलब समझाते हैं। बस एक पैराग्राफ में आपको यह समझने में मदद करने की कोशिश की जा रही है कि यह क्यों ज़रूरी है कि बाइबिल का यह लेखक पुराने नियम के इस हिस्से का ज़िक्र कर रहा है। आखिर में, इसके दो अलग-अलग इंडेक्स भी हैं।

इसमें एक न्यू टेस्टामेंट इंडेक्स है जहाँ आप न्यू टेस्टामेंट का कोई भी हिस्सा देख सकते हैं और वहाँ दिए गए ओल्ड टेस्टामेंट के संकेतों को देख सकते हैं, जो बहुत मददगार है। लेकिन मुझे लगता है कि यहाँ पीछे ओल्ड टेस्टामेंट इंडेक्स इससे भी बेहतर रिसोर्स है। यही बात इसे इतना ज़्यादा उपयोगी बनाती है।

तो अगर आप ओल्ड टेस्टामेंट का कोई हिस्सा पढ़ रहे हैं, क्योंकि इसमें सिर्फ़ न्यू टेस्टामेंट है, तो वे इसके ओल्ड टेस्टामेंट वर्शन पर काम कर रहे हैं। लेकिन अगर आप जेनेसिस 44 या कुछ और पढ़ रहे हैं, तो आप यहाँ जाकर कह सकते हैं, ठीक है, क्या न्यू टेस्टामेंट में जेनेसिस 44 के कोई इशारे हैं? और फिर आप देखें, और आप कहें, हाँ, यहीं हैं। और फिर आप उस न्यू टेस्टामेंट के हिस्से को देख सकते हैं और देख सकते हैं कि न्यू टेस्टामेंट का लेखक उस खास आयत या चैप्टर के साथ कैसे जुड़ रहा है।

और इसलिए यह रिसोर्स आपको कुछ कनेक्शन बनाने में मदद करने के लिए एक शानदार शुरुआती पॉइंट है। खत्म करते हुए यहां दो और बातें हैं। हम कैसे शुरू करें? गहराई से पढ़ना सीखें।

मुझे लगता है कि कभी-कभी हम बाइबिल के किसी हिस्से को इतनी तेज़ी से पढ़ लेते हैं कि हम धीमे नहीं होते और वाक्यांशों या तस्वीरों या सिंबल या भाषा पर ध्यान नहीं देते, और हम उन शब्दों को मिस कर देते हैं जो लेखक ने जानबूझकर इस्तेमाल किए हैं ताकि आपका ध्यान खींचा जा सके और कहा जा सके, अरे, एक मिनट रुको, धीरे बोलो। यह उस पहले वाले टेक्स्ट की ओर इशारा करता है। साथ ही, हम उल्टी गलती भी कर सकते हैं: अगर हम कभी बड़े पैमाने पर पढ़ना सीख जाते हैं, तो हम बड़ी तस्वीर के कनेक्शन नहीं देख पाते हैं, हम हर एक शब्द, क्लॉज़ और वाक्यांश की डिटेल में इतने खो जाते हैं कि हम बड़ी तस्वीर के फ़्लो और फिर उन बड़े कनेक्शन को मिस कर देते हैं जो धर्मग्रंथ हमारे लिए बताते हैं।

तो शुरू करने के लिए इतना काफी है। हमारे अगले सेशन में, हम हॉरिजॉन्टल और वर्टिकल दोनों कॉन्टेक्स्ट की स्टडी करने की वैल्यू देखेंगे। और मुझे यकीन है कि जब आप उन कॉन्सेप्ट्स को समझेंगे, तो आपको स्क्रिप्चर में कुछ ऐसे कनेक्शन दिखने लगेंगे जिन पर आपने शायद पहले कभी ध्यान नहीं दिया होगा।

यह डॉ. मैथ्यू एस. हारमोन हैं, जो बाइबल के इस्तेमाल पर एक सीरीज़ में हैं। यह सेशन 1 है, बाइबल के इस्तेमाल की स्टडी करने का महत्व और कैसे शुरू करें।